राष्ट्र निर्माण – राष्ट्र निर्माण की अवधारणा का सम्बन्ध राष्ट्रीयता की भावना के विकास और एक राष्ट्रीय राज्य के निर्माण से है। आमण्ड के अनुसार, राष्ट्र निर्माण से अभिप्राय है—'निष्ठाएं उत्पन्न करना।'

राष्ट्र निर्माण एक ऐसी जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जो सुव्यवस्थित रूप से तैयार की गयी विकास नीतियों के रूप में राजनीतिक इच्छाशक्ति को रेखांकित करती है। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के लिए सिद्धान्तों के निर्माण वाले दृष्टिकोणकी आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि ऐसे दृष्टिकोण की जरूरत है जो सद्भावना, समता और एकता की भावना पर आधारित हो। यह निष्ठाओं में परिवर्तन लाने वाली ऐसी अवधारणा है जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्रीयता जैसी संकुचित भावनाओं के बजाय राष्ट्र के प्रति निष्ठा उत्पन्न करती है।

कतिपय विचारकों के अनुसार, राष्ट्र निर्माण का अर्थ है राष्ट्र का संगठित होना और राष्ट्रीय एकीकरण । राष्ट्र निर्माण जहां एक ओर राष्ट्र के आर्थिक विकास पर जोर देता है वहीं दूसरी ओर राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने पर भी जोर देता है।रजनी कोठारी ने तीसरी दुनिया के नवोदित राष्ट्रों और खासतौर से स्वतन्त्र भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र निर्माण की आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। राष्ट्र निर्माण की अवधारणा नवोदित राष्ट्रों के नव-निर्माण, संगठन, विकास और एकीकरण से सम्बन्धित है।

भारत के लिए भी राष्ट्र निर्माण की समस्या एक चुनौतीपूर्ण समस्या रही है। नव स्वतन्त्र भारत के लिए आवश्यक था कि वह देशी रियासतों का एकीकरण करके अपना संगठित रूप स्थापित करे, शासन संचालन के लिए सर्वानुमति से संविधान का निर्माण करें, जातिवाद, सम्प्रदायवाद और क्षेत्रवाद की संकुचित प्रवृतियों को नियन्त्रित करते हुए एक संगठित व एकीकृत भारत का निर्माण करें।

आधुनिकीकरण के लिए राष्ट्रीय पहचान और एकीकरण बहुत आवश्यक है। अपनी प्रक्रिया में यह जनता की निष्ठाओं के मौलिक परिवर्तन और परिणामस्वरूप पुनः सामंजस्य को निहित करती है। इससे जनजातीय, सामंती और संकीर्ण विचार समाप्त हो जाते हैं और लोकतान्त्रिक व समतावादी विचार और लक्ष्य पर आधारित एक राष्ट्रीय समाज का विकास होता है।

• स्वतन्त्र भारत के शुरुआती कुछ साल चुनौतियों से भरे थे। सबसे बड़ी चुनौती राष्ट्रीय एकता और अखण्डता (राष्ट्र निर्माण) की थी।

मुख्यतौर से भारत के सामने तीन तरह की चुनौतियां थीं। पहली और तात्कालिक चुनौती एकता के सूत्र में बंधे एक ऐसे भारत को गढ़ने की थी जिसमें भारतीय समाज की सारी विविधताओं के लिए जगह हो। दूसरी, चुनौती लोकतन्त्र को कायम करने की थी। लोकतन्त्र को कायम करने के लिए लोकतान्त्रिक संविधान जरूरी होता है, लेकिन इतना भर काफी नहीं होता। चुनौती यह भी थी कि संविधान से मेल खाते लोकतान्त्रिक व्यवहार ब चलन में आएं। तीसरी, चुनौती थी ऐसे विकास की जिससे समूचे समाज का भला होता हो न कि कुछ एकतबकों का।

" आजादी के तुरन्त बाद राष्ट्र निर्माण की चुनौती सबसे प्रमुख थी... ..आजादी के समय राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा का सवाल सबसे प्रमुख चुनौती के रूप में उभरा"

• “1947 के बाद के पहले दशक में राष्ट्र निर्माण की चुनौती से सफलतापूर्वक निपटा गया। आजादी मिली, लेकिन देश का बंटवारा भी हुआ; देशी रियासतों को भारत सघ में शामिल करने का मसला तुरन्त हल करना जरूरी था; देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की भाषाएं अलग-अलग थीं, लोगों की आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए देश की अन्दरूनी सीमारेखाएं फिर से तय करनी थीं ।